प्रोजेक्ट –श्री ओडिसी नृत्य प्रज्ञा–कक्षा 1 से 5, एस.सी.ई.आर.टी.,छ.ग.,रायपुर

"एक विद्यार्थी के प्रखर व्यक्तित्व के निर्माण एवं विकास में साहित्य, संगीत और कला सभी आवश्यक है।" रवीन्द्रनाथ टैगोर

गीजू भाई, महात्मा गांधी, टैगोर जैसे मनीषियों का मानना है कि बौद्धिक विकास के साथ–साथ भावना का विकास भी आवश्यक है"। कला शिक्षा का उद्देश्य बच्चों के चरित्र, उनके सामाजिक और सौन्दर्य बोध का विकास करना है। N.C.F.–2005 में हर स्तर पर विषय के रूप में कला को जगह देने को सिफारिश की गई है, जिसमें गायन, नृत्य, दृश्य कलाओं और नाटक चारों पहलू शामिल हैं। कला शिक्षा गायन, नृत्य, दृश्य कलाओं और नाटक आदि विविध रूपों में खुद को व्यक्त करने को क्षमता को बढ़ावा देती है।

हमारा प्रदेश विभिन्न कलाओं और शिल्पों से समृद्ध है, हमें यह तय करना होगा कि कैसे कला एवं शिल्प विभिन्न विषयों जैसे भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान आदि कक्षाओं को रोचक बनाया जाये जिससे कक्षा शिक्षण बाल केन्द्रित हो सकें। साथ ही सीखने और सिखाने की प्रक्रिया आनन्ददायी और रोचक बन सके। नृत्य, गीत, संगीत, दृश्य कलाओं, नाटक आदि के माध्यम बच्चे स्वयं को अभिव्यक्ति करते है तो कक्षा में उनकी सक्रियता, आत्मविश्वास और कल्पनाशीलता को नए आयाम मिलने लगते हैं। इन्हीं बिन्दुओं को ध्यान में रख कर इस प्रोजेक्ट श्री ओडिसी नृत्य प्रज्ञा कक्षा 1 से 5 का विकास किया गया है।

उद्देश्य –

1. शिक्षण को रोचक व प्रभावी बनाना।
2. बच्चों को अभिव्यक्ति के अवसर देना।
3. बच्चों में कल्पनाशीलता का विकास करना।
4. अध्ययन, अध्यापन की प्रक्रिया को आनन्ददायी बनाना।
5. बच्चों में स्वस्थ मानसिकता का विकास करना जिससे वे समूह में आसानी से कार्य कर सकें और उनमें सामाजिक भावना का विकास हो।
6. बच्चों को प्रकृति व समाज के करीब लाना जिससे वे अपनी धरोहर व परम्पराओं से अवगत हो और उनकी संवृद्धि करें।

यह सम्पूर्ण कार्यक्रम प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए है जिससे वे नृत्य की बारीकियों से परिचित होने के साथ–साथ इस विधा को स्कूल शिक्षा का अभिन्न अंग बना सकें। प्राथमिक स्तर पर ललित कलाओं से प्राप्त अनुभवों से विद्यार्थियों में आगे की अवस्थाओं में कला के विभिन्न रूपों का चुनाव करने हेतु न केवल पर्याप्त प्रेरणा और रूचि जागृत होगी वरन् सौन्दर्यात्मकता के प्रति संवेदनशीलता तथा विरासत के प्रति सम्मान भी जागृत होगा।

श्री अरविन्द का कथन है –"यदि आँखें बाल्यावस्था ही से ही सौन्दर्य, सामंजस्य और रूप रंग देखने की अभ्यस्त होंगी तो बड़े होने पर उनकी रूचि, आदतें एवं चरित्र स्वतः उसी प्रकार के सौंदर्य, सामंजस्य और व्यवस्था का अनुसंरण करेंगे।"

इस प्रोजेक्ट में ओडिसी नृत्य विधा से बच्चों और शिक्षकों को रू–ब–रू कराया गया है।

- प्राथमिक स्तर पर नृत्य के माध्यम से बच्चे इस बात से अवगत होंगे कि किस प्रकार खड़ा होना चाहिए, श्वास लेना चाहिए अपनी रीढ़ की हड्डी को किस प्रकार रखना चाहिए और किस प्रकार चलना चाहिए इत्यादि।
- नृत्य के माध्यम से संवेदनाओं की अभिव्यक्ति होती है जिससे आपसी सामंजस्य बढ़ता है। बच्चे समूह में कार्य करते हैं और पारस्परिक निर्भरता बढ़ती है।
- नृत्य एकाग्रता में वृद्धि करता है, तनाव कम करने में सहायक होता है।
- जैसा कि आप सभी जानते हैं किसी भी कला का विकास एकान्त में नहीं होता प्रत्येक कला में अन्य कलाओं की झलक होती है। संगीत, कविता, पुराण, साहित्य, हास्य, चित्रकला, मूर्तिकला भी नृत्य से भली–भांति जुड़े हुए हैं।

अतः कहा जा सकता है कि नृत्य केवल एक कला, एक शारीरिक गतिविधि न होकर संस्कृति और समाज को जानने और उनसे जुड़ने का एक जरिया भी है। चूंकि शास्त्रीय नृत्य गीत, संगीत, अभिव्यक्ति, साहित्य, दर्शन पौराणिक कथाओं, लय, छन्द, योग एवं साधना जैसे सौन्दर्य के अनुभवों को व्यक्त करने का माध्यम है अतः इसे स्कूल शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर समझ के साथ शामिल करने का प्रयास है। इस प्रोजेक्ट के अन्तर्गत सी.डी. के साथ संदर्शिका भी संलग्न है जो ओडिसी नृत्य को सम्पूर्णता के साथ प्राथमिक शिक्षा से जोड़ने में सहायक होगी। यहाँ यह ध्यान रखना उचित होगा कि स्कूल शिक्षा में नृत्य के दोनों पक्षों – सैद्धांतिक और अभ्यास को इस तरह शामिल किया जाए कि **जोर** अपने आप सीखने पर हो, सिखाने पर नहीं।

अतः यहाँ बच्चों की अभिव्यक्ति के प्रत्येक चरण को प्रोत्साहित करना शिक्षक का महत्वपूर्ण दायित्व होगा। संवेदनशील शिक्षक बच्चों की अभिव्यक्ति को मूल्यवान मानने के साथ–साथ बच्चों की जरूरतों से सरोकार रखते हैं और आवश्यकतानुसार बच्चों की हर संभव मदद करते हैं। ऐसा करने पर बच्चों की उपलब्धियों में आशातीत वृद्धि होती है।

आपकी यह भूमिका इस प्रोजेक्ट को परिणाममूलक बनाकर इसका विस्तार करने में सहायक होगी ऐसा विश्वास है।

शुभकामनाओं सहित.....

(सुधीर कुमार अग्रवाल)
संचालक
एस.सी.ई.आर.टी. छ.ग. रायपुर